एक बाइबिलिक आह्वान सच्चे पश्चाताप और मसीह के साथ अंतरंगता के लिए

शालोम! और आपका स्वागत है, जब हम साथ में परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हैं।
आज हम यीशु मसीह के जीवन और सेवा के एक महत्वपूर्ण पहलू पर विचार करेंगे—एक ऐसा पाठ जो हमारी आध्यात्मिक स्थिति पर गहराई से प्रकाश डालता है और दिखाता है कि परमेश्वर वास्तव में हमसे क्या चाहता है।

पवित्र बाइबिल हमें स्पष्ट रूप से बताती है कि हमें मसीह में ज्ञान बढ़ाना चाहिए, ताकि हम आध्यात्मिक रूप से अब अप्रौढ़ और अस्थिर न रहें:

“…ताकि हम अब बच्चों की तरह किसी की बात से बहकते न रहें और
हर सिखावन की हवा से उड़ते न रहें…” (एफ़ेसियों 4:14)

यीशु ने बिना भेदभाव के सेवा की
अपने पृथ्वी पर सेवा के दौरान, यीशु स्थान-स्थान पर जाते और सभी लोगों को सुसमाचार का प्रचार करते—चाहे वे बूढ़े हों या बच्चे, अमीर हों या गरीब, धार्मिक हों या पापी। उन्होंने अमीरों और

गरीबों, “शुद्ध” और “अशुद्ध” लोगों, बच्चों और वृद्धों सभी की ओर ध्यान दिया। उन्होंने किसी विशेष समूह को प्राथमिकता नहीं दी, बल्कि सभी के लिए उपलब्ध रहे।

यह हमें सिखाता है कि जब हम सुसमाचार बांटें, तो हमें चयनात्मक या पक्षपाती नहीं होना चाहिए। दुख की बात है कि कुछ लोग गरीबों से दूर रहते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि उनके पास देने को कुछ नहीं है, जबकि अन्य अमीरों से दूर रहते हैं क्योंकि वे उन्हें अप्राप्य या uninterested समझते हैं। परंतु यीशु ने भेदभाव नहीं किया; उनका उद्देश्य भौतिक लाभ नहीं, बल्कि आत्माओं को परमेश्वर के राज्य के लिए बचाना था।

यीशु को गलत समझा गया, पर उनका उद्देश्य मुक्ति था
जहाँ भी वे गए, लोग उनकी मंशा को गलत समझते थे।

जब वे पापियों और गरीबों के साथ रहते, तो उन्हें मद्यप या अनैतिक कहा गया।
जब उन्हें अमीरों के बीच देखा गया, तो कुछ ने सोचा कि वे उनके धन के पीछे हैं।

लेकिन प्रभु ने अपना उद्देश्य स्पष्ट किया: वे धन कमाने नहीं आए, बल्कि पापियों को पश्चाताप के लिए बुलाने आए।

“जब यीशु उस घर में भोजन कर रहा था, देखो, कई करदाताओं और पापियों ने उसके और उसके शिष्यों के साथ भोजन किया। परन्तु जब फरीसी ने यह देखा, तो उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, ‘आपका शिक्षक करदाताओं और पापियों के साथ क्यों भोजन करता है?’
यीशु ने यह सुना और कहा, ‘स्वस्थ लोगों को चिकित्सक की
आवश्यकता नहीं, बल्कि बीमारों को है।
जाओ और सीखो कि इसका क्या मतलब है: “मैं दया चाहता हूँ, बलि नहीं।” क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं, बल्कि पापियों को
बुलाने आया हूँ।’” (मत्ती 9:10–13)

“मैं दया चाहता हूँ, बलि नहीं” – इसका अर्थ क्या है?
यीशु ने होशे 6:6 का उद्धरण दिया और यह बताया कि परमेश्वर बाहरी धार्मिक अनुष्ठानों की तुलना में पश्चाताप और दया से भरे हृदय को अधिक महत्व देता है। यीशु ने करदाताओं के साथ इसलिए भोजन किया ताकि उन्हें दया दिखाए और उनके पाप का बोध कराए।

परमेश्वर तुम्हारे धन में नहीं, बल्कि तुम्हारे हृदय में रुचि रखते हैं
कई लोग सोचते हैं कि परमेश्वर केवल हमारे भौतिक संपत्ति में रुचि रखते हैं। पर वास्तव में, परमेश्वर तुम्हारे आध्यात्मिक स्थिति में रुचि रखते हैं। उन्हें तुम्हारे धन में खुशी नहीं,

बल्कि तुम्हारी आत्मा की प्रचुरता में खुशी होती है।

“मैं दया चाहता हूँ, बलि नहीं।” (मत्ती 9:13)

मरियम और मार्था का उदाहरण
एक अन्य कहानी जो इसे स्पष्ट करती है, वह मरियम और मार्था की है (लूका 10:38–42):

“जब यीशु एक गाँव में पहुँचे, मार्था नामक एक स्त्री ने उन्हें अपने घर में स्वीकार किया।
और उसकी बहन मरियम ने उनके पैरों के पास बैठकर उनके शब्द सुने। मार्था कई कामों में व्यस्त थी और उसने कहा, ‘प्रभु, क्या आपको परवाह नहीं है कि मेरी बहन मुझे अकेला सेवा करने दे रही है? कहो कि वह मेरी मदद करे।’
प्रभु ने कहा, ‘मार्था, मार्था, तुम कई बातों को लेकर चिन्तित और व्यग्र हो।
परंतु एक ही आवश्यक बात है। मरियम ने अच्छा भाग चुना, जो उसे नष्ट नहीं किया जाएगा।’”

मरियम ने यीशु के पास बैठना और उनके शब्द सुनना चुना—“एक आवश्यक भाग।”

मार्था सेवा में व्यस्त थी, लेकिन उसने यह नहीं देखा कि यीशु वास्तव में क्या देना चाहते थे: जीवन उनके शब्दों के माध्यम से।

“मैं दया चाहता हूँ, बलि नहीं।”

सच्चे हृदय के बिना बलि मत दो
अक्सर लोग दसवां, उपवास या चर्च कार्य पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि उनके हृदय में पाप और भ्रष्टता होती है। यह परमेश्वर की पहली इच्छा नहीं है।

“अंधे फरीसियों! पहले प्याले और थाली के भीतर को साफ करो,
ताकि बाहरी भाग भी शुद्ध हो जाए।” (मत्ती 23:25–26)

परमेश्वर जो चाहता है, वही सच्चा उपवास है
“क्या यह वही उपवास नहीं है जो मुझे भाता है: अन्याय की जंजीरों को तोड़ना, जुए की रस्सियों को तोड़ना, और दबाए हुए लोगों को मुक्त करना;
क्या यह नहीं कि अपना रोटी भूखों के साथ बाँटना और बेसहारा गरीबों को घर में लाना?” (यशायाह 58:6–7)

सच्चा उपवास आज्ञाकारिता, पश्चाताप और दया से शुरू होता है।

आज ही परमेश्वर के पास लौटो
“संकीर्ण द्वार से जाओ! क्योंकि द्वार चौड़ा है और मार्ग विस्तृत है जो विनाश की ओर जाता… लेकिन संकीर्ण द्वार और संकीर्ण मार्ग जीवन की ओर जाता है, और थोड़े ही उसे पाते
हैं।” (मत्ती 7:13–14)

पाप से पश्चाताप करो और पूरी तरह मसीह को समर्पित हो जाओ। बपतिस्मा लो:

“पश्चाताप करो, और प्रत्येक अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम पर बपतिस्मा ले, और आप पवित्र आत्मा की देन प्राप्त करेंगे।” (प्रेरितों के काम 2:38)

परमेश्वर तुमसे वास्तव में क्या चाहते हैं

“परमेश्वर को प्रिय बलि टूटे हुए हृदय की है; एक नष्ट और
पिसा हुआ हृदय, हे परमेश्वर, तू तिरस्कार नहीं करेगा।” (भजन संहिता 51:17)

तुम्हारी पहली बलि एक पश्चाताप भरा हृदय होना चाहिए—तभी तुम्हारी अन्य बलियाँ परमेश्वर को प्रिय होंगी।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर तुम्हें इस संदेश के माध्यम से समझ और विश्वास दे।
यदि तुम तैयार हो, तो ये कदम उठाओ:

सच्चे मन से पश्चाताप करो।

यीशु मसीह के नाम पर बपतिस्मा लो (प्रेरितों के काम 2:38)।

पवित्र आत्मा को प्राप्त करो जो तुम्हें सभी सत्य में मार्गदर्शन करेगा और पवित्र जीवन जीने में सक्षम बनाएगा।

“क्योंकि परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई खो जाए, बल्कि सभी पश्चाताप करें।” (2 पतरस 3:9)

प्रभु तुम्हें अब बुला रहे हैं—not तुम्हारे बलि के लिए, बल्कि तुम्हारी आत्मा के लिए।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp